रचनाकार परिचय और सम्पर्क

आदित्य निगम विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली में प्रोफ़ेसर हैं। aditya@csds.in

विख्यात राजनीतिक-समाजशास्त्री **धीरूभाई शेठ** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली के पूर्व निदेशक और भारतीय भाषा कार्यक्रम के प्रमुख संस्थापक हैं। dlsheth@csds.in

यूनेस्को में समाज-विज्ञान के पूर्व निदेशक और विख्यात समाजशास्त्री **योगेश अटल** ने हाल ही में हिंदी में समाजशास्त्र पर एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक की रचना की है। yogatal@gmail.com

वरिष्ठ समाजशास्त्री **सतीश देशपाण्डे** दिल्ली स्कूल ऑफ़ इक़ॉनॉमिक्स, नयी दिल्ली में प्रोफ़ेसर हैं। sdeshpande7@gmail.com

जाति-प्रथा, वर्ग-संरचना और भारतीय राजनीति पर कई ग्रंथों के रचयिता और सम्पादक वरिष्ठ समाजशास्त्री **घनश्याम शाह** जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर रह चुके हैं। ghanshyam.shah2008@gmail.com

पुणे विश्वविद्यालय में सार्वजनिक प्रशासन और राजनीतिशास्त्र के प्रोफ़ेसर **सुहास पलशीकर** चुनावी राजनीति के प्रमुख अध्येता और 'लोकनीति' के सह-निदेशक हैं। suhas@unipune.ac.in

हैदराबाद विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र के प्रोफ़ेसर **के.के. कैलाश** 2007 से ही 'लोकनीति' के साथ जुड़े हुए हैं। kkkss@uohyd.ernet.in

जैन विश्वविद्यालय, बंगलुरु के उप-कुलपति **संदीप शास्त्री** 'लोकनीति' नेटवर्क के राष्ट्रीय संयोजक हैं। sshastri48@gmail.com

विभा अत्री 'लोकनीति' रिसर्च टीम की सदस्य हैं। vibhaattri@gmail.com

नितिन मेहता 'लोकनीति' रिसर्च टीम के सदस्य हैं। mehtanitin1807@gmail.com

राहुल वर्मा 'लोकनीति' रिसर्च टीम के सदस्य हैं। rahulverma@berkeley.edu

ज्योति मिश्रा 'लोकनीति' रिसर्च टीम की सदस्य हैं। jmishra23@yahoo.com

आशीष रंजन 'लोकनीति' रिसर्च टीम के सदस्य हैं। ranjanashish86@gmail.com

श्रेयस सरदेसाई 'लोकनीति' रिसर्च टीम के सदस्य हैं। mehtanitin1807@gmail.com

रीतिका स्याल जैन विश्वविद्यालय, बंगलुरु में राजनीतिशास्त्र की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। reetika.syal@jainuniversity.ac.in

राजेश्वरी देशपाण्डे पुणे विश्वविद्यालय में राजनीतिशास्त्र की प्रोफ़ेसर हैं। rajeshwari.deshpande@gmail.com

34_sandarbh_Layout 1 5/7/2014 3:22 PM Page 447

विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.) के निदेशक और कई पुस्तकों के रचयिता **संजय कुमार** देश के प्रमुख चुनावशास्त्रियों में से एक हैं। sanjay@csds.in

हिलाल अहमद विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। ahmed.hilal@csds.in

सौम्यव्रत चौधरी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। shomo.chaudury@gmail.com

प्रथमा बनर्जी विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। prathama@csds.in

रविकांत विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली में एसोसिएट फ़ेलो हैं। ravikant@csds.in

नरेश गोस्वामी विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली के भारतीय भाषा कार्यक्रम के साथ कार्यरत हैं। naresh.goswami@gmail.com

अविनाश झा विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली के पुस्तकालयाध्यक्ष हैं। avinash@csds.in

विपुल मुद्‌गल विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली में विज़िटिंग फ़ेलो हैं। vipulmudgal(at)gmail.com

अरविंद कुमार जामिया मिलिया इस्लामिया के डॉ. के.आर. नारायरणन सेंटर फ़ॉर दलित ऐंड माइनॉरिटी स्टडीज़ में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। akumar3@jmi.ac.in

धनंजय सिंह उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में फ़ेलो रह चुके हैं। djdu25@yahoo.com

उन्नीसवीं सदी के हिंदी-इतिहास पर शोधरत **चंदन श्रीवास्तव** विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली के इनक्ल्यूसिव मीडिया फ़ॉर चेंज परियोजना में कार्यरत हैं। chandan@csds.i

कमल नयन चौबे नेहरू मेमोरियल म्युज़ियम ऐंड लाइब्रेरी, नयी दिल्ली में जूनियर फ़ेलो हैं। kamalnayanchaube@gmail.com

आलोक टण्डन समाज-दर्शन के स्वतंत्र अध्येता हैं। dralokboi@yahoo.com

बौद्ध दर्शन के विख्यात विद्वान **अम्बिका दत्त शर्मा** डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मप्र) के दर्शन विभाग में प्रोफ़ेसर और विभागाध्यक्ष हैं। theadsharma@gmail.com

राकेश पाण्डेय विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली में एसोसिएट फ़ेलो हैं। rakeshpandey@csds.in

34_sandarbh_Layout 1 5/7/2014 3:22 PM Page 448

संस्कृत के विख्यात विद्वान **राधावल्लभ त्रिपाठी** डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मप्र) में प्रोफ़ेसर हैं। radhavallabh2002@gmail.com

अभय कुमार दुबे विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.), दिल्ली में भारतीय भाषा कार्यक्रम के निदेशक हैं। abhaydubey@csds.in

मृत्युंजय चटर्जी दिल्ली स्थित कलाकार और डिज़ाइनर हैं। mritunujay.chatterjee@gmail.com

चंदन शर्मा सराय और भारतीय भाषा कार्यक्रम में सक्रिय हैं। chandan_sharma@csds.in

मनोज मोहन दिल्ली स्थित पत्रकार और साहित्यकार हैं। manojmohan2010@yahoo.com

सुनील कुमार दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग में अनुसंधानकर्ता हैं।
bharatsunil.sunil@gmail.com

प्रतिमान के लिए संदर्भ-साँचा

हिंदी के शोध-संसार में वैसे तो अब लोग बड़े पैमाने पर संदर्भन करने लगे हैं, लेकिन अराजकता या उदासीनता अभी-भी कम नहीं है। हमारी कोशिश होगी कि लम्बे अरसे में विकसित और निहायत लोकप्रिय शिकागो या हार्वर्ड मैनुअल जैसी वैश्विक संदर्भन प्रणालियों का मूलतः इस्तेमाल करते हुए उसे भाषा के स्थानीय व्यवहार के मुताबिक़ अनुकूलित करें। लेखक/लेखिकाओं से अपील है कि वे अपने आलेख का शब्द-संयोजन करते वक़्त इन चीज़ों का ख़याल ज़रूर रखें, ताकि हमें सम्पादन में और सजग पाठकों को पढ़ने में कम मेहनत करनी पड़े। शोधपत्र में नाना प्रकार के स्रोतों को संदर्भित करने का तरीक़ा नीचे मिसाल दे कर सिलसिलेवार समझाया गया है।

ख़याल रहे कि कुछ मामलों में हमारा तरीक़ा इन तरीक़ों से अलग है। पहली बात, हम मूल आलेख में संदर्भ न डालकर फ़ुटनोट का इस्तेमाल करेंगे, और लेख के आख़िर में एक ग्रंथ-सूची देंगे। दूसरी बात, हम फ़ुटनोट व ग्रंथावली दोनों ही जगहों पर डॉट का इस्तेमाल करेंगे, जबकि मूल आलेख में पूर्ण विराम का। और, हमारे यहाँ जैसा रिवाज है नाम वैसे ही रखेंगे, यानी पहले पहला नाम, फिर उपनाम, और ग्रंथावली भी हिंदी वर्णक्रमानुसार इसी ढर्रे पर चलेगी। हमारे यहाँ लेखक अपने नाम के पहले डॉक्टर/डॉ. या प्रोफ़ेसर/प्रो. लगाते देखे गए हैं, हम उनके छोटे रूप से भी परहेज़ करेंगे, सिवाय प्राथमिक स्रोतों के, जैसे मोती बी.ए. अगर अपने तख़ल्लुस के साथ लिखते थे तो हम उनकी तमाम रचनाएँ मोती, बी.ए. के नाम से ही डालेंगे। संक्षेप में नाम लिखते समय डॉट का प्रयोग करें और स्पेस न दें, जैसे : जी.पी. श्रीवास्तव, न कि जी. पी. श्रीवास्तव। विख्यात संस्थाओं या देशों के नाम लिखते समय डॉट लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे : यूनेस्को, न कि यू.एन.ई.एस.सी.ओ.; या यूके, न कि यू.के.।

हम नुक़्ते का प्रयोग भी करेंगे, क्योंकि यह कुछ अंग्रेज़ी और उर्दू शब्दों के लिए ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर, ज़ुल्फ़िक़ार बुख़ारी, ज़िज़ेक, ज़ीटीवी, क़यामत, फ़रमाइश, ग़ज़ल, ख़याल, वग़ैरह। उसी तरह, हम हमेशा अर्धचंद्र या चंद्र बिंदु का इस्तेमाल करेंगे, जहाँ भी लगता है, जैसे कि 'फ़ुटबॉल' या 'ऑल इंडिया रेडियो' या फिर 'हँसना' या 'पाँच' में। ख़याल रहे कि अगर किसी भी दस्तावेज़ में अगर नुक़्ते / चंद्र बिंदु का इस्तेमाल मूल में नहीं हुआ है तो हम अपनी तरफ़ से न लगाएँ। उसी तरह अगर देसी पंचांग/संवत का प्रयोग हुआ है तो उसी का इस्तेमाल करें। जहाँ तारीख़ साफ़ नहीं / अनुपलब्ध है, वहाँ इसका ज़िक्र ज़रूर हो। कोलन या विसर्ग लगाते समय ध्यान रखें कि उसके दोनों तरफ स्पेस हो। हाँ, अगर किसी अंक के तुरंत बाद विसर्ग लगाया जा रहा है तो स्पेस केवल उसके बाद आएगा। हर जगह अंग्रेज़ी के अंकों का प्रयोग करें।

फ़ुटनोट में किताब के संदर्भन का क्रम :

पहला फ़ुटनोट इस प्रकार हमेशा पूरा लिखा जाएगा—

लेखक का नाम, किताब का नाम (टेढ़े अक्षरों में), फिर कोष्ठक में प्रकाशन का वर्ष, फिर प्रकाशक, फिर प्रकाशन की जगह, फिर कोलन लगा कर पृष्ठ संख्या.

मिसाल : सुमित सरकार (1985), *मॉडर्न इंडिया : 1885-1947*, मैक्मिलन, लंदन : 21.

लेख के अंत में दी जाने वाली संदर्भ-सूची में किताब के संदर्भन का क्रम :
सुमित सरकार (1985), *मॉडर्न इंडिया : 1885-1947,* मैक्मिलन, लंदन : 1985.
ज़ाहिर है कि यहाँ पृष्ठ संख्या नहीं देनी है।

अगर वही संदर्भ फ़ुटनोट में दोबारा आ रहा है, तो महज़ लेखक/किताब के नाम से काम चला सकते हैं, साथ में विसर्ग लगा कर पृष्ठ संख्या देना लाज़मी होगा। अगर लेखकों या सम्पादकों के दो नाम हैं तो पूरे जाएँगे, अगर दो से ज़्यादा, तो दोनों के बाद वग़ैरह लगाएँ। लेकिन पहले फ़ुटनोट और ग्रंथ-सूची में सारे नाम, पूरे जाएँगे। अगर किताब एक से ज़्यादा संस्करणों छप चुकी है तो जिस संस्करण का इस्तेमाल हुआ है, उसके ज़िक्र के साथ ब्रैकेट में मूल प्रकाशन का साल भी जाएगा। अगर एक ही रचनाकार की एक नाम से एक ही साल की दो शीर्षक-रचनाएँ उद्धृत की गई हैं तो उनके हवाले में भेद करने के लिए फ़ुटनोट/ग्रंथावली में रचना के नाम के बाद प्रकाशन वर्ष के साथ क, ख...आदि लगाया जाए।

मिसाल : रामचंद्र गुहा, (१९८२ क) 'फ़ॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश ऐंड पोस्ट-ब्रिटिश इंडिया : अ हिस्टोरिकल एनालिसिस', *इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* खंड 18, अंक 44 : 1882-1896.
(ख), 'फॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश एंड पोस्ट-ब्रिटिश इंडिया : ए हिस्टोरिकल एनालिसिस', *इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* खंड 18, अंक 45 : 1940-1947.
अगर किताब अनूदित है तो अनुवादक का नाम फ़ुटनोट और ग्रंथवाली में किताब के नाम के बाद कोष्ठक में आएगा :
मिसाल : मन्ना डे (2008), *यादें जी उठीं : एक आत्मकथा,* अंग्रेज़ी से अनुवाद : रक्षा शुक्ला, पेंगुइन बुक्स, नयी दिल्ली.

सम्पादित किताब में छपे लेख :
मिसाल : हरीश त्रिवेदी, 'ऑल काइंड्स ऑफ़ हिंदी : दि इवॉल्विंग लैंग्वेज ऑफ़ हिन्दी सिनेमा', आशिस नंदी व विनय लाल (सम्पा.), *फ़िंगरप्रिंटिंग पॉपुलर कल्चर : द मिथिक एण्ड दि आइकॉनिक इन इंडियन सिनेमा,* ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली : 51-86.

जर्नल-आदि में छपे लेख :
रचनाकार (प्रकाशन वर्ष), 'लेख का नाम', पत्र का नाम, खण्ड, अंक, किस पृष्ठ से किस पृष्ठ तक, आख़िर में अगर ख़ास पृष्ठ का ज़िक्र करना हो तो.
मिसाल : प्रेमलता वर्मा (2001), 'इब्ने-मरियम हुआ करे कोई', *बहुवचन,* वर्ष 2, अंक 8 (जुलाई-सितंबर) : 110-128, 115.

पत्रिका के आलेख :
मिसाल : बजरंग बिहारी तिवारी (2012), 'केरल में दलित आंदोलन और दलित साहित्य', *कथादेश,* वर्ष 32 : अंक 5 (जुलाई) : 76.

अख़बार में छपी रचना या रपट :
लेख : दीपानिता नाथ, 'रेडियो रिवाइंड', *आई : द संडे एक्सप्रेस,* नयी दिल्ली, 10 अगस्त, 2008.

34_sandarbh_Layout 1 5/7/2014 3:22 PM Page 451

रपट : 'यह क्षेत्र हिंदी में संकट का समय : असगर', जनसत्ता (2005), दिल्ली, 20 मार्च : 7.
छपे हुए साक्षात्कार के हवाले के लिए : साक्षात्कार देने वाले का नाम > शीर्षक व बातचीत करने वाले का नाम उद्धरण चिह्नों के बीच > किताब है तो लेखक से शुरू करके किताब वाला संदर्भन, अगर पत्रिका है तो पत्रिका वाला।
मिसाल : विश्वनाथ त्रिपाठी, 'रामविलास शर्मा 1950 में बीटीआर वाले माने जाते थे : अजेय कुमार से बातचीत), *उद्भावना* (रामविलास शर्मा महाविशेषांक : सम्पा. प्रदीप कुमार), अंक 104 : 199
अगर बातचीत ख़ुद लेखक/लेखिका ने की है तो ज़िक्र यूँ होगा : लेखक/लेखिका द्वारा साक्षात्कार, 13 अक्टूबर, 2005, नयी दिल्ली.

अभिलेखागार की सामग्री का हवाला :
होम डिपार्टमेंट, 42–48/नवंबर 1916, ए. जेल्स, नैशनल आर्काइव्ज़ ऑफ़ इंडिया, (आगे एनएआई).

अदालती मामलों / फ़ैसलों का हवाला यूँ दिया जाएगा :
ऑल इंडिया आईटीडीसी वर्कर्स यूनियन एवं अन्य बनाम आईटीडीसी एवं अन्य, (2006). 2007एआईआर 301, (2006) 10 एससीसी 66.

विश्व व्यापी वेब से ली गयी सामग्री का हवाला यूँ दिया जाएगा :
मिसाल : विकीपीडिया पर 'पान सिंह तोमर' :
http://en.wikipedia.org/wiki/Paan_Singh_Tomar; 28 जुलाई 2012 को देखा गया.

अगर प्रविष्टि हिंदी में है तो उसे हिंदी में दिखाएँ : http://hi.wikipedia.org/wiki/राजेश खन्ना. कई बार वेब पतों से नक़ल-चेपी करते हुए भारतीय भाषाओं की लिपि बदलकर अबूझ हो जाती है, जिससे बचने का उपाय यह है कि अंग्रेज़ी वेब-पते की नक़ल-चेपी करते समय देसी सामग्री को यथावत अपने वर्ड प्रोसेसर में अलग से टंकित करें.
चलती का नाम गाड़ी, पार्ट-4: यूट्यूब : http://www.youtube.com/watch?v=KWqkCpybNLo &feature=g-vrec; 30 जुलाई 2010 को संदर्भानुसार देखा/सुना/पढ़ा गया.
अगर लेख फ़िल्म-केंद्रित है, तो ग्रंथावली के साथ फ़िल्मावली भी देनी होगी, जिसमें फ़िल्म का नाम, साथ में निर्माता/निर्देशक और रिलीज़ हुए साल का ज़िक्र ज़रूरी होगा।
मिसाल : 'अब दिल्ली दूर नहीं', आरके फ़िल्म्स, निर्देशक : अमर कुमार, 1957. लेकिन मूल आलेख में ब्रैकेट में सिर्फ़ फ़िल्म का नाम व रिलीज़ वर्ष के ज़िक्र से काम चल जाएगा : ('अब दिल्ली दूर नहीं', 1957).

पहला हवाला पूरा होगा, लेकिन दूसरे में संक्षेपण का सहारा लिया जाए, लेकिन कुछ इस तरह कि संदर्भ पहचानने में भ्रम की गुंज़ाइश न रहे।
मिसाल : अनामिका (2008), *दस द्वारे का पींजरा,* राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली : 145.
दूसरी बार आने पर, *दस द्वारे का पींजरा* के बाद विसर्ग और पृष्ठ संख्या पर्याप्त होगा।
अगर संदर्भ लगातार फ़ुटनोट में हैं, तो 'वही : पृष्ठ संख्या' से काम चल जाएगा, अगर पृष्ठ भी नहीं बदला तो सिर्फ़ 'वही' पर्याप्त होगा।

34_sandarbh_Layout 1 5/7/2014 3:22 PM Page 452

भारतीय भाषा कार्यक्रम

पिछले बारह साल से **विकासशील समाज अध्ययन पीठ** (सी.एस.डी.एस.) का **भारतीय भाषा कार्यक्रम** समाज-विज्ञान और मानविकी में हिंदी के चिंतन-जगत को समृद्ध करने की परियोजना चला रहा है। अभी तक चार ग्रंथमालाओं (लोक-चिंतन ग्रंथमाला, लोक-चिंतक ग्रंथमाला, सामयिक विमर्श ग्रंथमाला और सरोकार ग्रंथमाला) के तहत वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पंद्रह से ज़्यादा पुस्तकों का बड़े पैमाने पर स्वागत हुआ है। इन ग्रंथमालाओं के तहत लोकतंत्र, भूमण्डलीकरण, दलित और आधुनिकता, सेकुलरवाद, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रवाद, राजनीतिक प्रणाली, नारीवाद और सेक्शुअलिटी जैसे विषयों पर उच्चकोटि की सामग्री प्रकाशित की गयी है। अपने शुरुआती वर्षों में कार्यक्रम का ज़ोर अंग्रेज़ी में उपलब्ध समाज-चिंतन की उच्च-स्तरीय रचनाओं को अनुवाद और सम्पादन के ज़रिये हिंदी में लाने पर था। हाल ही में इस कार्यक्रम ने अंग्रेज़ी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में भी अनुसंधानपरक समाज-चिंतन और उसके साथ जुड़ी हुई ज्ञानमीमांसक चुनौतियों से जुड़े प्रश्नों पर समग्र रूप से विचार करना शुरू किया है। इसीलिए अंग्रेज़ी से अनुवाद और सम्पादन की प्रक्रियाओं को दी गई प्रमुखता क़ायम रखते हुए अब यह कार्यक्रम हिंदी में अनुसंधानपरक समाज-चिंतन के मूल लेखन को प्रोत्साहन देने की दिशा में बढ़ रहा है। समाज-विज्ञान और मानविकी की पूर्व-समीक्षित पत्रिका ***प्रतिमान*** *समय समाज संस्कृति* का प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया एक अहम क़दम है जिसकी परिणति आगे चल कर अनुसंधान और लेखन की एक सघन और बहुमुखी योजना में होगी। फ़िलहाल परियोजना हिंदी-जगत तक सीमित है, लेकिन जल्दी ही अन्य भारतीय भाषाओं में पहलक़दमियाँ लेने की कोशिशें की जाएँगी।